इकाई 3

समसामयिक मुद्दे

हमारे संविधान में सबके लिए समता और समानता के अधिकार का प्रावधान है। लेकिन आस–पास नजर डालें तो ऐसी कई स्थितियाँ देखने को मिलती हैं, जहाँ कई क्षेत्रों में असमानताएं हैं। साहित्य में अक्सर ऐसी असमानतापूर्ण सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिस्थितियों की झलक मिलती है। इस इकाई में उन्हीं परिस्थितियों को केंद्र में रख कर कुछ रचनाओं को शामिल किया गया है।

राजेश जोशी की कविता **बच्चे काम पर जा रहे हैं** आर्थिक विषमता, अधिकारों के उल्लंघन और बाल श्रम के प्रति असंवेदनशीलता की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करती है। इसी तरह मन्नू भंडारी की कहानी **अकेली** में सोमा बुआ के युवा पुत्र की मृत्यु से पनपे एकाकीपन और अपनों द्वारा भावात्मक अस्वीकार्यता का मार्मिक चित्रण किया गया है। दोनों रचनाएँ वृद्धों और बच्चों के प्रति समाज के असहज व्यवहार को रेखांकित करती हैं, जबकि हमारा दायित्व है कि हम बुजुर्गों और बच्चों का विशेष ध्यान रखें।

कृश्न चंदर की कहानी **जामुन का पेड़** संवेदनशून्य व्यवस्था और उसमें फँसे आम आदमी के जीवन की विडंबना को व्यंग्यात्मक व हास्यपरक रूप में प्रस्तुत करती है। इस हास्यपरकता को बनाने के लिए कहानी में व्यवस्था पर अतिश्योक्तिपूर्ण व्यंग्य भी किया गया है।

जगदीश चंद्र माथुर की प्रसिद्ध एकांकी **रीढ़ की हड्डी** समाज में स्त्रियों के प्रति व्याप्त रूढ़िवादी मानसिकता पर प्रहार करते हुए, स्त्रियों में शिक्षा से उत्पन्न आत्मविश्वास, साहस व स्वयं निर्णय लेने की क्षमता को प्रस्तुत करती है।

इस इकाई में समाज में मौजूदा समस्याओं की एक बानगी भर मिलती है, जबकि ऐसे अनेक मुद्दे हैं, जिन पर विचार किए जाने की जरूरत है। हम आशा करते हैं कि इस इकाई को पढ़ते हुए आप और आपके साथी अपने आस–पास की सामाजिक परिस्थितियों पर विचार कर पाएंगे।